CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B-1

सा विद्या या विमुक्तये
विद्या भारती

विद्या भारती द्वारा सञ्चालित

अखिल भारतीय संस्कृति-ज्ञान परीक्षा प्रश्नोत्तरी

६

स्कैन्ड / Scanned

तमिल भाषा में सर्वोत्कृष्ट 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रन्थ के रचयिता संत तिरुवल्लुवर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय संस्कृति-ज्ञान परीक्षा

संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र-१३६ ११८ (हरियाणा)

निवेदन –

विश्व के प्रायः सभी विकसित देशों में धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता का ज्ञान छात्रों को कराना, उनके शिक्षा कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है, परन्तु दुर्भाग्यवश धर्मभूमि भारत में धर्म-संस्कृति की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। राष्ट्र की वर्तमान दुरवस्था का यह भी एक कारण है।

आज भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन की चर्चा चल रही है। सर्वप्रथम हमें छात्रों को संवेगात्मक दृष्टि से शिक्षित करने की व्यवस्था करनी होगी। धर्म, संस्कृति, नीति एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा को शिक्षा-व्यवस्था में प्रमुख स्थान देना होगा।

'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' अपने संलग्न विद्यालयों में इस दिशा में प्रयत्नशील है। विद्या भारती द्वारा नैतिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, संगीत शिक्षा, योग शिक्षा तथा संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रम कक्षानुसार निर्धारित किये गये हैं। प्रस्तुत 'संस्कृति-ज्ञान परीक्षा' इसी योजना का अगला चरण है। पूर्ण विश्वास है कि हमारे छात्र इस योजना से अवश्य लाभान्वित होंगे।

प्रस्तुत पुस्तिका में विभिन्न विषयों को प्रश्नों के माध्यम से संक्षिप्त रूप दिया गया है। आचार्य बन्धुओं से निवेदन है कि वे इनके संबंध में छात्रों को विस्तार से बताने की कृपा करें।

– मंत्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

① मातृभूमि भारत

प्रत्येक भारतीय को यह देश प्राणों से प्यारा है। इसका कण-कण पवित्र है। तभी तो प्रत्येक भारतीय गाता है, "कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है।" इस भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। इसके स्वरूप का वर्णन वाणी व लेखनी द्वारा असम्भव है, फिर भी माता के पुत्र होने के नाते इसके भव्य दिव्य स्वरूप का अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अपनी इस महिमामयी, पवित्र मातृभूमि के भारतवर्ष, आर्यावर्त, भरत-खण्ड, हिन्दुस्थान आदि अनेक नाम हैं। अपनी मातृभूमि के प्रति कितनी श्रद्धा होती है वहाँ के रहने वालों में, क्यों न हो? माँ के जीवन का ही अंश उसकी संतान हैं-तभी मातृभूमि के पुजारी गाते हैं-

सुन्दर होंगे देश बहुत से, बहुत बड़ी है यह धरती।
पर अपनी माँ तो अपनी है, अमित प्यार है जो करती।।
इच्छा है इस जन्मभूमि पर, शत-शत बार जन्म लें हम।
शत-शत बार इसी की सेवा में, अपना जीवन दें हम।।

प्राचीन काल में अपनी मातृभूमि की सीमाओं के अन्तर्गत पूर्व में ब्रह्म देश, बंग्ला देश, पश्चिम में पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान (उप गणस्थान), उत्तर में तिब्बत, तथा दक्षिण में श्रीलंका आदि देश सम्मिलित थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उड़ीसा

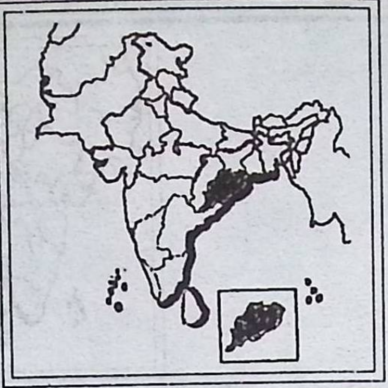

हमारे प्रदेश

हमारा देश बहुत बड़ा है।
प्रशासन की दृष्टि से इसमें कई राज्यों की रचना की गई है। उनमें से एक राज्य है उड़ीसा।
आओ, हम उड़ीसा की जानकारी प्राप्त करें।

१. उड़ीसा के प्राचीन तीन नाम हैं।
(क)......................(ख)....................(ग)................
(कलिंग, ओद्र, उत्कल)

२. उड़ीसा की राजधानी .... है। (भुवनेश्वर)

३. भुवनेश्वर के पास प्रसिद्ध गुफाएँ हैं। (क)........................(ख)..................
(उदयगिरि, खण्डगिरि)

४. उड़ीसा में कोणार्क का प्रसिद्ध .... है। (सूर्य मन्दिर)

५. आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन जगन्नाथ जी, बलराम जी एवं सुभद्रा जी की ....निकलती है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु-भक्त 'पुरी' आते हैं।
(रथ-यात्रा)

६. उड़ीसा में पारादीप नाम का बड़ा............................है। (बन्दरगाह)

७. भारत के कच्चे लोहे के साधनों का................................ इस राज्य में है।
(तीसरा भाग)

८. उड़ीसा की प्रमुख नदियाँ हैं।
(क)....................(ख)......................(ग)...............(महानदी, वैतरणी, ब्राह्मणी)

९. संबलपुर नगर के निकट................ बाँध............ पर है। (हीराकुण्ड, महानदी)

१०. चार धामों में से एक धाम उड़ीसा में.................... है और पवित्र........मन्दिर समुद्र तट पर स्थित है। (पुरी, जगन्नाथ)

११. उड़ीसा का प्रसिद्ध नृत्य है............और यहां की प्रमुख भाषा है.....।
(ओडिसी, उड़िया)

१२. उड़ीसा में भारत की सबसे बड़ी लैगून झील .... स्थित है। (चिल्का)

उड़ीसा के संबंध में जानने योग्य बातें :-

(क) प्राचीन उड़ीसा में वैष्णव, शैव, जैन और बौद्ध सम्प्रदाय थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) कटक उड़ीसा का सबसे बड़ा शहर है।

(ग) यहाँ चाँदी के पतले तारों का काम (तारकसी) प्रसिद्ध है।

(घ) उड़िया में गीत को चम्पू कहते हैं।

(ङ) उड़ीसा के कवि जयदेव ने संस्कृत में 'गीत-गोविन्द' नामक काव्य की रचना की थी जिसके संस्कृत श्लोक़ जगन्नाथ मंदिर में संगीतबद्ध कर गाए जाते हैं।

गुजरात

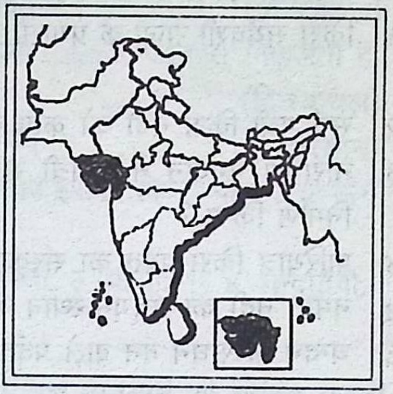

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गुजरात प्रदेश प्राकृतिक सम्पदा से तो भरपूर है ही, साथ ही इसका सांस्कृतिक इतिहास भी बहुत समृद्ध है। भगवान श्री कृष्ण ने उत्तर प्रदेश की तुलना में इसी प्रदेश को राज्य स्थापित करने के लिए चुना एवं सागरतट पर द्वारका को अपनी राजधानी बनाया। स्वतंत्रता के नायक महात्मा गांधी का जन्म पोरबन्दर में हुआ और स्वामी दयानंद (मूल शंकर) का जन्मस्थान होने का गौरव भी इस प्रदेश को है। लौहपुरुष सरदार पटेल भी इसी राज्य के रहने वाले थे। सोमनाथ का मन्दिर न केवल भारतीयों के लिए बल्कि विदेशियों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसी प्रदेश का पालिताणा स्थान प्रसिद्ध जैन तीर्थ है जहाँ ८६३ मंदिर हैं। गुजरात प्रदेश में भारत की सांस्कृतिक धरोहर शताब्दियों से सुरक्षित है।

राज्य के सम्बन्ध में जानने योग्य बातें :–

१. **गुजराती**–प्रदेश की राज्य भाषा **गुजराती** है।

२. **गांधीनगर**–इसकी राजधानी है जो **साबरमती नदी** के निकट स्थित है।

३. **कॉंडला**–उत्तर पश्चिमी भारत के लिए मुख्य बन्दरगाह है।

४. **कच्छ का रण**–मुख्यतः दलदल वाला क्षेत्र है परन्तु **खम्भात की खाड़ी** के किनारे समुद्र जल से **नमक** तैयार किया जाता है।

५. **कर्णावती (अहमदाबाद), सूरत - सूती कपड़े उद्योग** के लिए बहुत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसिद्ध हैं।

६. **अंकलेश्वर** में **खनिज तेल** और **पैट्रोल गैस** निकाली जाती है।

७. **महीनदी** पर बना बाँध इस राज्य की **बिजली एवं सिंचाई** की आवश्यकताएं पूरी करता है।

८. राज्य के अधिक भाग में काली मिट्‌टी पाई जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिख दीजिए।

१. किस सूर्यवंशी राजा के प्रयासों से भारत-भूमि पर गंगा अवतरित हुई? **(भगीरथ)**

२. सूर्य पुत्री किस नदी को कहा जाता है? **(यमुना)**

३. नारायण भगवान ने गंगोत्री से पवित्र जल लाकर किस कुण्ड का निर्माण किया ? **(नारायण कुण्ड)**

४. पारियात्र किस पर्वत का संस्कृत नाम है? **(अरावली)**

५. नर्मदा नदी का उद्‌गम-स्थान क्या है? **(अमरकण्टक)**

६. चन्दन के सघन वन वाले पर्वत का क्या नाम है? **(मलयपर्वत)**

७. बदरीनाथ धाम में किन पाँच शिलाओं को स्थापित किया गया है? **(नारदशिला, मारकण्डेय शिला, नृसिंह शिला, वराह शिला, गरुड़ शिला)**

८. हनुमान जी द्वारा कैलास से लाया गाया शिवलिंग कहाँ स्थापित किया गया? **(काशी)**

✧ आइए, हम जानें द्वादश ज्योतिर्लिंगों को।

सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (श्रीशैलम् आन्ध्रप्रदेश), महाकालेश्वर (उज्जियिनी, मध्यप्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), केदारनाथ (उत्तराञ्चल), भीमशंकर (महाराष्ट्र), विश्वनाथ (काशी, उ.प्र.), त्र्यम्बकेश्वर (नासिक, महाराष्ट्र), वैद्यनाथ (झारखण्ड),नागेश्वर (गुजरात) रामेश्वरम् (तमिलनाडु), घुश्मेश्वर (घृष्णेश्वर) एलोरा (महाराष्ट्र)।

✧ निम्नलिखित स्थान कहाँ स्थित हैं?

(क) वैष्णो देवी (ख) वैशाली (ग) तक्षशिला (घ) कुभानगर (ङ) पंजासाहिब (च) लवपुर **(जम्मू-कश्मीर, बिहार, रावलपिण्डी (पाकिस्तान)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पास, अफगानिस्तान, पाकिस्तान (लाहौर)

क. *हमारी मातृभूमि की रचना देवताओं ने स्वयं की है। फिर क्यों न हम नदी, पर्वत, पठार, वन, झील आदि की जानकारी करें।*

१. नीलगिरि पर्वत.................. प्रदेश में है। **(कर्नाटक)**

२. सतपुड़ा की पहाड़ियाँ........................की शोभा बढ़ा रही हैं। **(मध्यप्रदेश)**

३. भारत के मध्य में..................... पर्वत है। **(विन्ध्याचल)**

४. नर्मदा, शोणभद्र आदि पवित्र नदियाँ.............. पर्वत से निकलती हैं। **(विन्ध्याचल)**

५. सांभर झील..................... प्रदेश में है। **(राजस्थान)**

६. कितना विशाल है हिमालय पर्वत आप इसकी किन्हीं पाँच ऊँची-ऊँची चोटियों के नाम बताइए।
१. गौरीशंकर (एवरेस्ट) २. कंचनजंघा, ३. धौलागिरि ४. नन्दादेवी, ५ अन्नपूर्णा।

ख. *नदियों की पवित्र जल-धारायें सदैव इस मातृभूमि को सिंचित करती रहती हैं। आप बताइये कि–*

१. विश्व में सबसे सघन बसा हुआ एवं सबसे विशाल नदियों का मैदान कौन-सा है? **(गंगा-यमुना का मैदान)**

२. उत्तर भारत की छः पवित्र नदियों के नाम बताइये। **(गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गोमती, सरयू)**

३. दक्षिण भारत की भी छः पवित्र नदियों के नाम बताइये। **(महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, ताम्रपर्णी)**

अपने देश की वर्तमान सीमाएं रिक्त स्थानों की पूर्ति करके बताइयेः-

१. उत्तर में गगनचुम्बी...................पर्वत है। **(हिमालय)**

२. दक्षिण में......................... इसके चरण पखारता है। **(हिन्दु महासागर)**

३. दक्षिण पूर्व में........एवं दक्षिण-पश्चिम में.....है। **(गंगासागर, सिन्धुसागर)**

४. पूर्व में .... है। **(ब्रह्मदेश या म्यांमार)**

५. उत्तर-पश्चिम में........... एवं.......देश हैं। **(पाकिस्तान, अफगानिस्तान)**

६. अफगानिस्तान, बर्मा, तिब्बत के प्राचीन नाम।
१..................२.........................३......................... हैं।
(गांधार (उपगणस्थान), ब्रह्मदेश, त्रिविष्टप)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२.) पुत्ररूप हिन्दू समाज

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। अपनी भारतीय परम्पराओं में भक्त एवं कर्मयोगी नारियों की अधिक मान्यता है। भारतीय नारी में अतुलनीय शक्ति है। नीचे कुछ महान् नारियों के महान् कार्यों का वर्णन है, जिनके कारण उन्होंने नारी की गरिमा को उज्ज्वल किया है।

१. "यमराज ! मेरा सुहाग लौटा दो।", यमराज ने कहा, "नहीं कुछ और मांगो"। तो मेरे सास-श्वसुर को ज्योति प्रदान करें। "तथास्तु" 'मेरे सास-श्वसुर का राज्य वापस आ जाये।" "हाँ यह हो जायेगा।" "अच्छा, यमराज एक वरदान और दीजिए।" "क्या ?" "मैं पुत्रवती होऊँ !" यमराज ने बिना सोचे समझे कह दिया, "तथास्तु !" ओह, बिना पति के पुत्र कैसे? अन्त में यमराज ने उसके पति को जीवित कर दिया। इस प्रकार............... ने अपनी सूझ-बूझ और धैर्य से अपने पति को जीवित करवा लिया। (सावित्री)

२. पति के साथ जंगल में वर्षों बिताए। जंगल से अपहरण के पश्चात् अपहरणकर्ता की घोर यातनाएँ सहीं, परन्तु नारी-धर्म नहीं छोड़ा। मुक्ति के बाद पति ने जंगल में भेज दिया, वहाँ भी अपने पुत्रों को पाल-पोसकर इस योग्य बनाया कि, उन्होंने अपने पिता के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को रोक लिया। जब पति ने उन्हें पुनः घर चलने को कहा तो वह श्रेष्ठ नारी............... धरती माँ के गर्भ में समा गई। **(सीता)**

३. .... ने अपने पति (वाचस्पति मिश्र) के सुख को ध्यान में रखकर उनके कार्य को सफलता प्रदान की। पति ने प्रसन्न होकर अपने ग्रंथ का नाम अपनी पत्नी के नाम पर रखा। **(भामती)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीरप्रसूता भारत माँ ने असंख्य वीर-पुत्रों को अपनी कोख से जन्म दिया है। अगणित वीर पुत्रों ने अपनी वीरता की धाक स्थापित की है। कुछ वीर पुत्रों की वीरता प्रदर्शित करने वाले कार्य लिखे हैं। पहले आप उन वीर-पुत्रों का स्मरण कीजिए और कोष्ठक में लिखे नामों में से सही नाम पर सही (✔) का निशान लगाइए, तत्पश्चात् आप स्वयं कितने वीर बन सकते हैं, यह सोचिए और बनकर दिखाइए।

१. दीवार में चिनवा दिए गए परन्तु धर्म नहीं छोड़ा।

(राम सिंह, संत सिंह, फतेह सिंह, ज़ोरावर सिंह)

२. चिनते-चिनते दीवार गर्दन तक पहुँच गई। दोनों की आँखें मिलीं, मुस्कराए। एक टक एक दूसरे को देखते रहे। एकाएक बड़े भाई की आँखों से आंसू टपक पड़े, छोटे भाई ***(फतेह सिंह, राम सिंह, जोरावर सिंह)*** ने पूछा, "भैया क्या मृत्यु से डर गए?" नहीं भैया, "हिन्दू कभी मौत से डरता है क्या?" बड़े भाई ***(ज़ोरावर सिंह, राम सिंह, फतेह सिंह)*** ने उत्तर दिया। "आँखें इसलिए भर आयीं कि मैंने पहले जन्म लिया परन्तु धर्म पर बलिदान पहले तुम हो रहे हो।

३. शत्रु से लड़ते हुए युद्ध के मैदान में गुरू गोविन्द सिंह के पुत्रों ने अपने प्राणों का बलिदान किया। ***(अजीत सिंह, जुझार सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह)***

४. "तुम्हें धन मिलेगा, राज्य मिलेगा।" पर किसलिए?" "केवल अपना धर्म छोड़कर इस्लाम कबूल कर लो।" "नहीं। "कभी नहीं"। और अंत में उसे मिली मौत। ***(बालक हकीकत राय, पृथ्वीराज)***

५. छोटी आयु में ही वह वीर निर्भीक बालक शेर के बच्चे से खेला करता था। ***(भरत, कृष्ण, राम)***

६. राजा दुष्यन्त को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बालक शेरनी के बच्चे से खेल रहा है। ***(लव, कुश, भरत)***

७. अत्याचारी कंस को बालक ने बाल पकड़कर सिंहासन से खींच लिया और भूमि पर पटक कर उसे मार डाला। ***(राम, कृष्ण, अभिमन्यु)***

८. मदमस्त कुवलयापीड़ हाथी को अपने बाहुबल से परास्त किया।

(भरत, राम, कृष्ण, अभिमन्यु)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. चक्रव्यूह से चिन्तित युधिष्ठिर को जिसने चक्रव्यूह-भेदन का बीड़ा उठाकर आश्चर्य में डाल दिया और चक्रव्यूह में तीर की भांति अकेला ही प्रवेश कर गया। *(अभिमन्यु, एकलव्य)*

१०. शास्त्रों के टूट जाने एवं समाप्त हो जाने पर जो रथ के पहिये से ही युद्ध करता रहा। *(अर्जुन, अभिमन्यु)*

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें–

१. 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रगीत के रचयिता कौन थे? **(बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय)**

२. वन्देमातरम् यह गीत किस पुस्तक में है? **(आनन्द मठ)**

३. "भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ" के रचियता एवं क्रांतिकारी कौन थे? **(वीर सावरकर)**

४. धन्वन्तरि किस विषय के जन्म दाता थे? **(आयुर्विज्ञान)**

५. परमाणु सिद्धान्त के आविष्कर्ता प्राचीन भारतीय ऋषि कौन थे? **(कणाद)**

६. विन्ध्याचल के दक्षिण में तथा अन्य द्वीपों में वैदिक संस्कृति को पहुँचाने वाले ऋषि कौन थे? **(अगस्त्य)**

७. प्रातः स्मरण में सप्तऋषियों का उल्लेख है वे सप्तऋषि कौन थे? **(कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ)**

८. आकाश में स्थित 'सप्तर्षि-मण्डल तारामण्डल' के सात ऋषियों के नाम। **(मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ)**

३ संस्कृति

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

आर्य संस्कृति वैदिक संस्कृति ही है। यही प्राचीनतम संस्कृति है। इसी संस्कृति ने विश्व को ज्ञान दिया है। विश्व की अनेक संस्कृतियाँ इसी से उपजी हैं। यहाँ की आर्य जाति से ही मानव जाति का विकास हुआ है। अतः सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैली मानव जाति को प्रेरित करने वाली यह वसुन्धरा भारत भूमि ही रही है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकादशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ।।मनु०।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे यहाँ से लोग भारत के बाहर भी गए। उन्हें अपने धर्म, आचार के प्रति अनुराग तो था ही। उनके सम्पर्क से विदेशी भी यहाँ आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। महाभारत-काल तक तो भारतीय नरेशों से विदेशियों के वैवाहिक सम्बन्ध भी थे। अवश्य ही उनकी कन्याएँ भारत में आयीं। इस प्रकार विश्व के समस्त मानव कुल ५ सहस्र वर्ष पूर्व तक भारतीय संस्कृति के ही अनुयायी थे। वे यहीं से अपने आचार की प्रेरणा प्राप्त करते थे।

भारत वर्ष में ही सर्व प्रथम शून्य की खोज हुई और ज्ञान विज्ञान के सूर्य का प्रादुर्भाव यहीं से हुआ। अतएव भारत का हर व्यक्ति यह कह सकता है कि–

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

ईश्वर-भक्ति

हम सभी परमब्रह्म परमेश्वर की संतान हैं। चींटी से लेकर हाथी तक के भोजन का प्रबन्धक वही परम नियंता ईश्वर है। कुम्हार के दहकते आवे में उन बिल्ली के बच्चों की प्राण रक्षा ईश्वर ने ही तो की थी। जब हाथी और मगरमच्छ की लड़ाई में हाथी बिल्कुल डूबने लगा तो उसके प्राणों की रक्षा स्वयं भगवान ने आकर की।

जिसकी हम सन्तान हैं उसको हम स्मरण करें। नित्य बैठकर उसका चिन्तन करें। किसी न किसी दिन उस ईश्वर से हमारा साक्षात्कार अवश्य होगा।

(क) रिक्त स्थानों में ईश्वर भक्तों के नाम भरो :-

१. सात वर्ष के बालक...... ने ईश्वर में अटल विश्वास रखकर भयंकर जंगल में एक पैर पर खड़े होकर तपस्या की और ईश्वर का दर्शन किया। **(ध्रुव)**
२. भगवत् प्रेम में............. विष को भी अमृत के संमान पी गयी। **(मीरा)**
३. पिता की यातना......... को ईश्वर भक्ति से नहीं डिगा पायी। **(प्रह्लाद)**
४. भक्त......अपना कर्म करते समय भी भगवान का नाम लेते रहते थे। **(रविदास)**

(ख) नीचे लिखे-वाक्यों का संबंध जिस धर्म-ग्रंथ से है उस धर्म-ग्रन्थ के नाम पर सही (✓) का चिन्ह लगा दीजिए।

१. रामायण/महाभारत/विष्णु पुराण/शिव पुराण, में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस/रामायण/गीता की रचना की।
३. श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया हुआ उपदेश गीत गोविन्द/गीता के नाम से प्रसिद्ध है।
४. श्रीमदभगवद्गीता/गुरुग्रंथ साहिब/कुरान शरीफ, सिक्खों का धर्मग्रंथ है।
५. रामायण/कठोपनिषद्/ऋग्वेद हिन्दुओं का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।
६. महाभारत के रचयिता वेदव्यास/गणेश जी थे।

एकात्मता स्तोत्रम्-नदी, पर्वत एवं प्राचीन पुरियाँ

आप एकात्मता स्तोत्र का पाठ तो करते ही होंगे। इस स्तोत्र में आयी हुई पवित्र नदियों, पर्वतों एवं पुरियों से संबंधित श्लोक अर्थ सहित लिख दीजिए।

१. ***गंगा सरस्वती सिन्धुर्ब्रह्मपुत्रश्च गण्डकी।***
कावेरी यमुना रेवा कृष्णा गोदा महानदी।।

(गंगा, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गण्डकी, कावेरी, यमुना, रेवा (नर्मदा), कृष्णा, गोदावरी तथा महानदी प्रमुख नदियाँ)

२. ***महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः।***
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा।।

महेन्द्र (उड़ीसा में), मलय गिरि (दक्षिणी कर्नाटक तथा तमिलनाडु में), सह्याद्रि (महाराष्ट्र), देवतात्मा हिमालय (भारत के उत्तर में), रैवतक (काठियावाड़ में गिरनार नाम से), विन्ध्याचल (मध्य प्रदेश) तथा अरावली (राजस्थान) पर्वत ध्यान करने योग्य हैं।

३. ***अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चि अवन्तिका।***
वैशाली द्वारिका ध्येया पुरी तक्षशिला गया।।

अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काञ्चि, अवन्तिका (उज्जैन), द्वारका, वैशाली, सोमनाथ, जगन्नाथपुरी, तक्षशिला तथा गया पुरियाँ (नगरियाँ)।

❑ *निम्नलिखित पर्वत किस-किस प्रान्त में हैं :-*

१. महेन्द्रगिरि २. मलय ३. सह्याद्रि ४. रैवतक ५. विन्ध्याचल ६. अरावली

(उत्कल (उड़ीसा) में, कर्नाटक में, महाराष्ट्र में, गुजरात में, मध्य प्रदेश में, राजस्थान में)

❑ ब्रह्मा के मानस-पुत्रों के नाम लिखिएं।

(सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन।)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❑ सात रसातलों के नाम लिखिए। **(अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल तथा पाताल।)**

❑ सप्त-सिन्धु (सात समुद्र) कौन-कौन से हैं?**(लवण सागर, इक्षुसागर, आज्यसागर, दधिसागर, क्षीरसागर, स्वादुजलसागर, मधुसागर)**

❑ ***निम्नलिखित सातों मोक्ष पुरियाँ क्यों प्रसिद्ध हैं?***

१. अयोध्या २. मथुरा ३. मायापुरी (हरिद्वार) ४. काशी ५. कांची, ६. अवन्तिका (उज्जयिनी), ७. द्वारावती (द्वारका)

१. **अयोध्याः** भगवान श्रीराम की जन्मस्थली, २ **मथुराः** भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली, यहाँ ब्रह्मकुण्ड में स्नान कर राजा भर्तृहरि ने अमरत्व प्राप्त किया। ३. **मायापुरी (हरिद्वार):** यहाँ प्रति १२वें वर्ष कुम्भ का मेला लगता है। ४. **काशीः** जैनमत के सातवें तीर्थंकर एवं तेइसवें तीर्थंकर की जन्मस्थली एवं विश्वनाथ, अन्नपूर्णा और मानस मंदिर हैं। यहाँ के गंगाघाट भी प्रसिद्ध हैं। ५. **कांचीः** यह मोक्षपुरी दक्षिण भारत में है, तथा दक्षिण की काशी मानी जाती है। ६. **अवन्तिका (उज्जयिनी)** भगवान शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में से महाकाल नामक ज्योतिर्लिंग का स्थान है एवं महाप्रतापी राजा विक्रमादित्य की राजधानी रही है, ७. **द्वारावती (द्वारका)** श्री कृष्ण की राजधानी यहाँ आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित शारदापीठ है एवं चार धामों में इसकी गणना है उक्त सातों पुरियाँ मोक्षपुरियाँ कहलाती हैं।

❑ ***निम्नलिखित संकेतों की सहायता से सम्बन्धित प्राचीन नगरों के नाम बताइये-***

१. उत्तर में गंगा-यमुना के संगम पर स्थित............। **प्रयाग (इलाहाबाद)**
२. बिहार प्रान्त में गंगा और शोणभद्र नदियों के तट पर स्थित ऐतिहासिक नगर..........। **पाटलिपुत्र (पटना)**
३. कर्नाटक में प्रसिद्ध हिन्दू साम्राज्य की राजधानी..........। **(विजयनगरम्)**
४. उड़ीसा में प्रसिद्ध तीर्थ एवं चार धामों में से एक....... । **(जगन्नाथपुरी)**
५. पाण्डवों की राजधानी................। **(इन्द्रप्रस्थ)**
६. बिहार में फल्गू नदी के तट पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ.......। **(गया)**

एकात्मता मंत्र

यं वैदिका मन्त्रदृशः पुराणा, इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं, यं ब्रह्म शब्देन विनिर्दिशन्ति।।१।।
शैवा यमीशं शिव इत्यवोचन्, यं वैष्णवा विष्णुरिति स्तुवन्ति।
बुद्धस्तथाऽर्हन्निति बौद्धजैनाः, सत् श्री अकालेति च सिक्खसन्तः।।२।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्तेति केचित् कतिचित् कुमारः, स्वामीति मातेति पितेति भक्त्या।
यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारं, स प्रभुरद्वितीयः।।३।।

प्राचीन काल के मन्त्रदृष्टा ऋषियों ने जिसे इन्द्र, यम मातरिश्वान् कहकर पुकारा और जिस एक अनिर्वचनीय को वेदान्ती ब्रह्म शब्द से निर्देशित करते हैं।

शैव जिसको शिव और वैष्णव जिसको विष्णु कहकर स्तुति करते हैं। बौद्ध और जैन जिसे बुद्ध और अर्हंत कहते हैं, तथा सिक्ख सन्त जिसे 'सत् श्री अकाल' कहकर पुकारते हैं।

जिस जगत् के स्वामी को कोई शास्ता तो कोई कुमारस्वामी कहते हैं, तो कोई जिसको स्वामी, माता-पिता कहकर भक्तिपूर्ण प्रार्थना करते हैं, वह प्रभु एक ही है और अद्वितीय है अर्थात् उसका कोई जोड़ नहीं है।

(४) इतिहास

देशभक्तों की कथाएँ

देशभक्तों का जीवन मातृभूमि को समर्पित होता है। अपने जीवन का प्रत्येक सुख वे मातृभूमि पर न्यौछावर करते हैं। देशभक्तों की देवी-देवता उनकी मातृभूमि होती है तभी तो ये गीत गाये जाते हैं-

"सुन्दरियों ने जहाँ देश-हित, जौहर-व्रत करना सीखा,
स्वतंत्रता के लिए जहाँ, बच्चों ने भी मरना सीखा।
वहीं जा रहा पूजा करने, लेने सतियों की पद-धूल,
वहीं हमारा दीप जलेगा, वहीं चढ़ेगा माला-फूल।।

उन देशभक्तों के नाम लिखिए जिन्होंने-

१. लक्ष्मण से कहा, "अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी-जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" **(भगवान् राम)**
२. जंगलों में भूखे-प्यासे कष्टमय जीवन बिताया, परन्तु अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। **(महाराणा प्रताप)**
३. बीजापुर क़े दरबार में जिसने सिंह गर्जना की, "मैं विधर्मी के सामने अपना मस्तक नहीं झुकाऊँगा।" **(शिवाजी)**
४. समर्थ गुरु रामदास की प्रेरणा से जिन्होंने हिन्दू-साम्राज्य का निर्माण किया। **(शिवाजी)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. बाल्यावस्था में मिठाई का दोना कूड़े में फेंकते हुए कहा, "विदेशियों के राज्यारोहण की हम खुशियां क्यों मनाएँ?" **(डॉ. हेडगेवार)**
६. यूनियन जैक को लहराते देख विद्यार्थी जीवन में ही अपने गुरु के घर में से सुरंग बनाकर उसे हटाने की योजना बनायी। **(डॉ. हेडगेवार)**
७. १६ वर्ष की अल्पायु में जो भारत माँ को आजाद कराने हेतु फांसी पर चढ़ गया। **(खुदीराम बोस)**
८. लाहौर में लाला लाजपतराय पर लाठी बरसाने का हुक्म देने वाले सांडर्स को गोली से उड़ा दिया। **(सरदार भगत सिंह)**
९. जीवन के अन्त तक अंग्रेजों से लोहा लेते हुए अपने नाम 'आजाद' को सार्थक किया। **(चन्द्रशेखर आजाद)**
१०. भारतीय जनता को आह्वान किया, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" **(सुभाषचन्द्र बोस)**

रामचरितमानस

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का पाठ घर-घर में होता है। यहाँ पर उसमें से राम के वनवास जाते समय का एक प्रसंग लिया गया है। श्रीराम लक्ष्मण को अयोध्या में रहने के लिए समझाते हैं किन्तु लक्ष्मण उनका अनुगमन करने का हठ करते हैं। अन्त में माता सुमित्रा उन्हें समझाती हैं-जहाँ राम वहाँ सब हैं।

बोले बचनु राम नय नागर। सील सनेह सरल सुख सागर।।
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू।।

दो. ***मातु पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहिं सुभायँ।***
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर, नतरु जनमु जग जायँ।।

चौ. अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई। करहु मातु पितु पद सेवकाई।
भवन भरतु रिपुसूदनु नाहीं। राउ बृद्ध मम दुखु मम माहीं।।
मैं बन जाउँ तुम्हहि लेई साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा।।
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू।।
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होइहि बड़ दोषू।।
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी।।
रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी।।
सिअरें बचन सूखि गए कैसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो. ***उतरु न आवत प्रेम बस, गहे चरन अकुलाइ।।***
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह, तजहु त काह बसाइ।।

चौ. दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं। लागि अगम अपने कदराईं।।
नरबर धीर धरम धुर धारी। निगम नीति कहुँ ते अधिकारी।।
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहि मराला।।
गुरु पित मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहु।।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।।
मोरे सबई एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी।।
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही।।
मन क्रम बचन चरन रत होई। कृपासिंधु परिहरिअ किं सोई।।

दो. ***करुनासिंधु सुबंधु के, सुनि मृदु बचन बिनीत।***
समुझाए उर लाई प्रभु, जानि सनेहँ सभीत।।

चौ. मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु वन भाई।
मुदित भए सुनि रघुवर वानी। भयउ लाभ बड़ गई बड़ हानी।।
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइ दिवसु जहँ भानु प्रकासू।।
जौं पै सीय रामु वन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं। सेइअहिं सकल प्रान की नाईं।।
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वार्थ रहित सखा सबही के।।
पूजनीय प्रिय परम जहाँ ते। सब मनिअहिं रामहि के नाते।।

दो. ***भूरि भाग भाजनु भयहु, मोहि समेत बलि जाउँ।***
जौं तुम्हरे मन छाड़ि छलु, कीन्ह राम पद ठाउँ।।

रामायण की कथा

राम सर्वत्र व्याप्त हैं, उनको कौन नहीं जानता, वे तो पुरुषोत्तम थे। उनकी कथा का वर्णन रामायण में है। क्या आप जानते हैं :–

१. रामायण की रचना आदि कवि......... ने की है। **(वाल्मीकि)**
२. रामायण............. भाषा में लिखी गई है। **(संस्कृत)**
३. पुरुषोत्तम राम के पिता जी का नाम................ और माता का.......... था। **(दशरथ, कौसल्या)**
४. भाई राम के वनवास से लौट आने तक पादुका को प्रतीक बनाकर... .... ने शासन चलाया। **(भरत)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. मूर्छित लक्ष्मण के लिए संजीवनी लाने वीर.............गये थे। (हनुमान)
६. लंका विजय के पश्चात् राम ने....को वहाँ का राज्य प्रदान किया। (विभीषण)
७. नल-नील ने समुद्र पार करने के लिए...........का निर्माण किया। (सेतु)
८. लव-कुश.................... के पुत्र थे। (श्री राम)
६. लव-कुश का जन्म.............. में हुआ। (वाल्मीकि आश्रम)

बाल क्रान्तिकारी

स्वाधीनता स्वयंमेव प्राप्त होने वाली कोई सहज प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह उन स्वप्न-द्रष्टाओं की विषय परिकल्पना है जिसकी बलि-वेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर इसे साकार किया है। माँ की चरण-रज में स्वयं को समर्पित करने वाले महान क्रान्तिकारियों में कुछ ऐसे भी थे जो जीवन की प्रथम दहलीज 'बचपन' में ही "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का भाव लिये मातृभूमि की बलि-वेदी पर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर भारतीय इतिहास के प्रज्ज्वलित पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गये। आइये, हम उन बाल क्रान्तिकारियों का स्मरण करें :

(क) **मोहम्मद इस्माइल**– वीर बालक जो मात्र ७ वर्ष की आयु में अमृतसर के जलियां वाला हत्या काण्ड में 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का घोष करते हुए शहीद हो गया।

(ख) **सीताराम और ढोंडी सन्तू**– महाराष्ट्र के सांगली जिले के मंगरोल गाँव के निवासी तथा दलित परिवारों से संबंधित १२ वर्ष की अल्पायु के बालक जिन्होंने अपने गांववासियों को फिरंगी पुलिस के अत्याचार से बचाने के लिए स्वयं का बलिदान कर दिया।

(ग) **बच्चन प्रसाद, छठूगिरि, झगरू साह**– बिहार के सीवान क्षेत्र में १६४२ के आन्दोलन के समय सीवान के न्यायालय पर तिरंगा फहराने के अपराध में पुलिस से जूझते हुए मात्र १२ वर्ष की आयु में शहीद हो गए।

(घ) **विशन सिंह कूका**– पंजाब के वीर कूकाओं द्वारा गौरक्षा आन्दोलन के समय कसाईयों से गौओं को छुड़ाने के अपराध में पकड़े गये ५० कूकाओं में एक १३ वर्ष का बालक, जिसने अंग्रेज अधिकारी द्वारा गुरु के प्रति अपशब्द कहने पर उस अंग्रेज की दाढ़ी नोच डाली। परिणाम स्वरूप उसके दोनों हाथ कटवा दिए गए और मातृ-भूमि की बलि-वेदी पर एक और बालक शहीद हो गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) **कालीबाई**– राजस्थान के डूंगरपुर जिले की एक १३ वर्षीय बालिका जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने विद्यालय के दो आध्यापकों नाना भाई जी और सेंगा भाई जी को अंग्रेजों के कब्जे से छुड़ाने के अपराध में अपने जीवन की बलि चढ़ा दी।

(च) **बाजी रावत**– उड़ीसा के नीलकंठपुर गाँव का १३ वर्षीय बालक जिसने अंग्रेज सिपाहियों को अपने पिता की नाव पर नदी पार कराने से इन्कार कर दिया और इस प्रकार अंग्रेज सिपाहियों की क्रूरता का शिकार हो गया।

भारतीय काल गणना

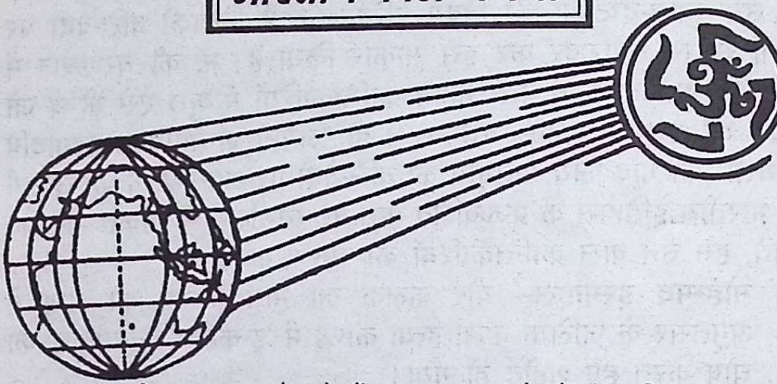

आप घड़ी पर समय देखते हैं तथा आप उसे सेकंड, मिनट व घण्टों में व्यक्त करते हैं। समय की यह प्रणाली पश्चिमी देशों की देन है। भारतीय मनीषियों ने समय की गणना पल व घड़ी में की है। आइए हम अपने इस समय गणना ज्ञान की जांच कर लें:– २–१/२ पल= १ मिनट, ६० पल=२४ मिनट=१ घड़ी/घटिका/घटी, २–१/२ घटी=१ घण्टा।

६०घटी=२४ घण्टे या १ दिन–रात, ३० दिन=१ मास, १२ मास=१ वर्ष

सृष्टि की आयु नापने के लिये तीन मुख्य मान उल्लिखित हैं:

युग, मन्वन्तर, एवम् कल्प चार युगों का एक महायुग होता है। ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर होता है। (एक मनु तथा दूसरे के बीच का अन्तर)। प्रत्येक मन्वन्तर का मनु अलग-अलग होता है।

अतः ४ युग =१ महायुग, ७१ महायुग=१मन्वन्तर, १४ मन्वंतर=१ कल्प।

वर्षों से युग बनते हैं। चार युगों से एक महायुग बनता है। इन चार युगों के नाम व अवधि इस प्रकार हैं–

सतयुग=१७,२८,००० वर्ष	त्रेता युग=१२,६६,००० वर्ष
द्वापर युग=८,६४,००० वर्ष	कलियुग=४,३२,००० वर्ष

वर्तमान में कलियुग के ५,१०२ वर्ष बीत चुके हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) संस्कार शृंखला

जिस विद्या मन्दिर में हम पढ़ते हैं, वह हमारा अपना विद्या मन्दिर है। कुछ बातें यहाँ लिखी हैं। आप इस संदर्भ में 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए।

१. क्या विद्या मन्दिर में छुट्टी के दिन भी बिना बुलाये कभी जाते हैं? **हाँ/नहीं**

२. विद्या मन्दिर में कहीं पड़ी गन्दगी को क्या आप स्वयं भी साफ करते हैं? **हाँ/नहीं**

३. अपनी कक्षा में डेस्क, कुर्सी, मेज, दीवार पर चित्र तथा मानचित्र व्यवस्थित हैं, क्या यह आप प्रतिदिन देखते हैं? **हाँ/नहीं**

४. क्या विद्या मन्दिर में बाल भारती/बाल सभा में छोटे-मोटे काम, झाड़ू लगाना, दरी बिछाना, कुर्सी मेज लगाना आदि काम कभी आप करते हैं? **हाँ/नहीं**

५. क्या आप विद्या मन्दिर के उद्यान में फल-फूल और पौधों की देखभाल करने में आनन्द लेते हैं? **हाँ/नहीं**

६. क्या विद्या मन्दिर के कर्मचारी/आचार्य/प्रधानाचार्य आदि के प्रति आपके हृदय में स्नेह/सम्मान की भावना है? **हाँ/नहीं**

७. उनके पूर्ण नाम/पते आदि की जानकारी रखते हैं? **हाँ/नहीं**

८. अपने घर आये अतिथि/सम्बन्धियों को क्या आप विद्या मन्दिर दिखाने ले जाते हैं? **हाँ/नहीं**

९. क्या आप अपने विद्या मन्दिर की त्रुटियाँ दूसरों को बताते हैं? **हाँ/नहीं**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्टाचार

आप बड़े होनहार छात्र हैं। आप अपने अच्छे व्यवहार के कारण ही तो अपने माता-पिता एवं आचार्यों के प्रिय हैं। अपने सहपाठियों के बीच में आपके गुणों का सम्मान होता है। आखिर क्यों? इसका उत्तर नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थान भरने से ज्ञात हो जायेगा।

१. आप आगन्तुकों से दोनों हाथ जोड़कर.......... करते हैं। **(नमस्ते)**
२. घर में पूजा-पाठ के समय पर आप भी......रहते हैं। **(उपस्थित)**
३. आप कक्षा में आचार्य जी से.......... लेकर प्रवेश करते हैं। **(अनुमति)**
४. आप सदैव कक्षा में आचार्य जी के सम्मुख........... होकर ही प्रश्न पूछते हैं अथवा उत्तर देते हैं। **(खड़े)**
५. अपने मित्रों के साथ खेलते समय............. रखते हैं। **(खेल भावना)**
६. मार्ग में चलते समय मिले अंधे, लूले, लंगड़े व्यक्ति की आप.... करते हैं। **(सहायता)**
७. जब दो व्यक्ति बात कर रहे हैं तो आप बीच में नहीं..... हैं। **(बोलते)**
८. विद्यालय के उत्सवों के अवसर पर आप अपने साथियों के साथ प्रत्येक.............. में सहयोग करते हैं। **(कार्य)**
९. आप सदैव बड़ों का .... करते हैं। **(सम्मान)**

हमारे संत एवं महापुरुष

जिन्होंने जीवन पर्यन्त अपने सभी भौतिक सुखों को त्याग कर समाज के कल्याण हेतु चिन्तन किया और जो कुछ कहा वह स्वयं अपने जीवन में दर्शाया भी। आओ, ऐसे अपने सन्तों के जीवन की कुछ घटनाओं से हम शिक्षा ग्रहण करें। ठीक नाम छाँट कर सही (✓) का चिन्ह लगाइए।

१. स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है।
(लोकमान्य तिलक/गोपाल कृष्ण गोखले)
२. भारतीयों को संगठित करने के लिए जिन्होंने अभिनव भारत नामक संगठन की स्थापना की थी। **(सुभाष/सावरकर)**
३. जैन मत के २४वें तीर्थंकर का नाम। **(गौतम बुद्ध/महावीर)**
४. तपस्या करते-करते पीपल वृक्ष के नीचे जिन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।
(शंकराचार्य/गौतम बुद्ध)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. अपनी पत्नी रत्नावली से प्रेरित होकर लोक कल्याणार्थ हिन्दुत्व के प्रथम प्रचारक के रूप में मुगल काल में श्री रामचरितमानस की रचना की। **(गोस्वामी तुलसीदास/ सूरदास)**

हमारे सांस्कृतिक पर्व

हमारे देश के पर्व हमारी सांस्कृतिक परम्परा के प्रतीक हैं। क्या आप अपने इन पर्वों के संबंध में जानते हैं?

१. किस दिन शस्त्रों की पूजा होती है? **(विजयादशमी)**

२. अपनी शिक्षा पूर्ण करके जब शिष्य अपने घर को प्रस्थान करते थे तो वे गुरु को किस दिन गुरुदक्षिणा प्रदान करते थे? **(गुरुपूर्णिमा)**

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :-

३. रक्षा बन्धन का त्यौहार भारतीय मास..........में मनाया जाता है। **(श्रावण)**

४. गुरुपूर्णिमा का उत्सव भारतीय मास...... में मनाया जाता है। **(आषाढ़)**

५. भारतीय नया वर्ष.................से प्रारम्भ होता है। **(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)**

६. गणेश जी का जन्म दिवस......... को मनाया जाता है। **(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)**

७. दीपों के उत्सव का नाम............... है। **(दीपावली)**

८. सामाजिक समरसता के भाव में वृद्धि करने के उद्देश्य से शीत ऋतु में मनाये जाने वाले त्यौहार का नाम....... है। **(मकर संक्रान्ति)**

गुरुभक्तों की कथाएं

अपने यहाँ गुरु को भगवान् का स्थान प्राप्त है। क्यों न प्राप्त हो? हमारे पालन-पोषण का कार्य हमारे माता-पिता करते हैं और हमारे भावी जीवन का निर्माण गुरु। ऋषिकुल और गुरुकुलों में छात्र को गुरु से माता-पिता का स्नेह भी प्राप्त होता था और वह विद्या भी प्राप्त होती थी जिसके आधार पर छात्र अपने भावी जीवन का निर्माण करता था। तभी तो कहा गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।

नीचे कुछ गुरुभक्त बालकों के जीवन की घटनाओं का वर्णन है, उसके आधार पर उस शिष्य का नाम रिक्त स्थानों में अंकित कीजिए।

१. "मैंने तुम्हें गायों का दूध पीने से मना किया है, फिर तुम क्या खा-पीकर दिन बिताते हो?" गुरु ने शिष्य......... से प्रश्न किया। शिष्य ने बड़े नम्र स्वर में उत्तर दिया, "गुरुदेव में बछड़ों के दूध पीते समय गिरे झाग को चाटकर अपनी क्षुधा शान्त करता हूँ।" **(उपमन्यु)**

२. आकाश में काली घटा घिरी और तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई। गुरु धौम्य चिन्तामग्न थे कि धान के खेतों की मेंड़ को तोड़कर पानी बाहर न निकल जाये। उनके शिष्य .... ने उनकी इस चिन्ता को दूर करने हेतु पानी में स्वयं लेटकर पानी को खेत में से निकलने से रोका।**(आरुणि)**

मित्र एवं भ्रातृ-प्रेम

जनता के हृदय पर शासन करने वाले भगवान कृष्ण ने द्वारपाल के मुँह से जैसे ही अपने मित्र का नाम सुना, नंगे पैरों दौड़ पड़े और जा लिपटे अपने मित्र सुदामा से फूट-फूट कर रोते हुए कहने लगे–

"हाय महा दुःख पायो सखा, तुम आये इतै न कितै दिन खोये।"

राम-लक्ष्मण का भ्रातृ-प्रेम अनुकरणीय है। पिता से भी अधिक भाई से प्रेम करने वाले राम के ही मुँह से सुनिए–

जौ जनतेउँ वन बन्धु बिछोहू। पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू।
सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस विचारि जिय जागहुँ ताता। मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।।

आइए, मित्र-प्रेम एवं भ्रातृ-प्रेम के लिए हमारे प्रेरणा-स्रोत बनने वाले कुछ महापुरुषों के जीवन के प्रसंगों पर दृष्टि डालें।

रिक्त स्थान भरिए–

१. आगे-आगे अकेले महाराणा प्रताप पीछे कुछ शत्रु सैनिक। राणा के सिर और शत्रु की तलवार में केवल कुछ ही इंच की दूरी। परन्तु यह क्या? पलक झपकते ही शत्रु सैनिक की बाँह तलवार सहित शरीर से अलग जा गिरी और सिर धड़ से अलग। इस प्रकार महाराणा के प्राण बचाने वाले उनके भाई का नाम .... था। **(शक्ति सिंह)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. जंगल में महाराणा प्रताप को शत्रुओं ने अकेला घेर लिया। उनसे बचने के लिए चेतक पर सवार महाराणा प्रताप ने नाला पार किया ही था कि चेतक ने प्राण त्याग दिए। परन्तु भाई .... ने अपना घोड़ा देकर राणा प्रताप के जीवन की रक्षा शत्रुओं से की। **(शक्ति सिंह)**

३. अपने प्रिय मित्र सुदामा के घर के चावलों को .... ने बड़े प्रेमपूर्वक खाया। **(श्री कृष्ण)**

४. " तुम्हारे ही भाग्य से श्रीराम वन को जा रहे हैं। हे पुत्र! दूसरा कोई कारण नहीं है। सम्पूर्ण पुण्यों का सबसे बड़ा फल यही है।" माता सुमित्रा के ये वचन सुनकर .... भी श्रीराम के साथ हो लिये। **(लक्ष्मण)**

५. शक्ति लगने से मूर्छित भाई को गोद में लेकर .... ने प्रतिज्ञा की, कि बिना छोटे भाई के वह घर लौटकर नहीं जायेंगे। **(राम)**

६. राजा बनना स्वीकार कर .... ने............ की पादुकाएँ राज्य सिंहासन पर रखीं व सेवक की भाँति राज्य का संचालन किया। **(भरत,राम)**

श्रीमद् भगवद्गीता

गीता का ज्ञान होने पर मोक्ष का द्वार खुल जाता है। उसके लिए हमें क्रमशः आगे बढ़ना होगा। हमारे लिए सांख्य योग नामक द्वितीय अध्याय के कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोक दिए जा रहे हैं। आइए इनको कण्ठस्थ करके समझने का प्रयास करें।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।२/३०।।

हे अर्जुन! यह आत्मा सबके शरीर में सदा ही अवध्य है। इस कारण सम्पूर्ण प्राणियों के लिये तू शोक करने के योग्य नहीं है।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि।।२/३३।।

किन्तु यदि तू इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।।२/३४

तथा सब लोग तेरी बहुत काल तक रहने वाली अपकीर्ति का ही कथन करेंगे और माननीय पुरुष के लिये अपकीर्ति मरण से भी बढ़कर है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।२/४७

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। इसलिये तू कर्म के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

योगस्थः कुरु कर्माणि संग त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।२/४८

हे धनञ्जय ! तू आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्य कर्मों को कर यही समत्व योग कहलाता है।

ध्यायतो विषयान् पुंसः संग स्तेषूपजायते।
संगत्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।२/६२

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाभ्द्रवति सम्मोहः सम्मोहात्दमृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।२/६३

क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से मनुष्य अपनी मनुष्यता से गिर जाता है।

भोजन मंत्र

ॐ यन्तु नदयो वर्षन्तु पर्जन्याः। सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु।
अन्नवतामोदनवतामामिक्षवताम्। एषां राजा भूयासम्।
ओदनमुदब्रुवते परमेष्ठी वा एषः यदोदनः। परमामेवैनं श्रियं गमयति।

(कृष्ण यजुर्वेद)

अर्थ—नदियाँ गतिमान हों। (जल से परिपूर्ण प्रवाहित हों) मेघ बरसें, औषधियाँ फलवती हों। तिनके से लेकर सोमवल्ली तक सभी पेड़ लताएँ, पुष्पित-पल्लवित तथा फलित हों इन धान्यों वाले, चावल एवं छैना (दूध, दही, मक्खन, घी आदि गव्य पदार्थ) वाले लोगों के राष्ट्र का मैं पालक (रंजन करने वाला) राजा बनूँ। थाली में परोसा हुआ पका चावल "भात" स्वयं श्रेष्ठतम अन्नरूपी ब्रह्म (परमेश्वर) है। वह सेवन करने वाले को उच्चतम ऐश्वर्य एवं शरीर सम्पदारूपी लक्ष्मी को प्राप्त कराता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया। (अथर्ववेद)

अर्थ–भाई-भाई से द्वेष न करे। बहिन-बहिन से झगड़ा न करे। सभी ठीक रीति से (एकता का व्रत लेकर परस्पर कल्याण करने वाली) वाणी बोलें।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर् ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्।
ब्रह्मवौ तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।। (गीता)

अर्थ–यज्ञ में आहुति देने के साधन (स्रुचि-स्रुवा हाथ की मृगी-हंस व्याघ्र आदि मुद्रायें) "अर्पण" भी ब्रह्म हैं, हवन करने का पदार्थ "हवि" भी ब्रह्म है, ब्रह्मरूप अग्नि में ब्रह्मस्वरूप होमकर्ता द्वारा जो हवन किया गया, वह भी ब्रह्म है। अतः ब्रह्मरूप में कर्म में समाधिस्थ पुरुष के द्वारा जो प्राप्त होने योग्य है, वह ब्रह्म ही है।

ओ३म् सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्यङ्करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।
ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!! (कठोपनिषद् २/३/१६)

अर्थ–(प्रभु) हम दोनों (गुरु और शिष्य) की एक साथ रक्षा करें। हम मिलकर खायें। (देश में कोई भूखा न रहे) हम साथ साथ मिलकर शौर्य करें (राष्ट्र में परचक्र आने पर युद्ध करें।) हमारा देश संगठन रूपी तपश्चर्या से उज्ज्वल एवं प्रदीप्त हो। हम विद्वान एवं अध्ययनशील हों। परस्पर द्वेष न करें तो (राष्ट्र में) शान्ति बनी रहे, यही विचार सत्य है। ओ३म् शान्तिः! शान्ति!! शान्ति!!!

आदर्श बालक

ये वे गुण हैं जो अच्छे बालक में अवश्य होने चाहिए। अब रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :–

१. सूर्योदय से..................... उठना। (पूर्व)
२. उठकर माता-पिता के......... स्पर्श करना। (चरण)
३. नित्य दाँत..................... रखना। (स्वच्छ)
४. नित्य............व.............. करना। (स्नान, भगवद्भजन)
५. शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नित्य................. करना। (व्यायाम)
६. सदा.....................पहनना। (स्वच्छ कपड़े)
७. गुरुजनों का................ करना। (आदर)
८. माता-पिता की............... का पालन करना। (आज्ञा)
९. सबसे सदा.........बोलना। (प्रिय वाणी)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. अच्छे छात्रों से.................. रखना। (सम्बन्ध)
११. महापुरुषों की.............. पढ़ना। (जीवनियाँ)
१२. परोपकारी कार्यों में सदैव...............रहना। (आगे)
१३. नित्य कुछ समय महापुरुषों की जीवनियाँ, अच्छे गीतों तथा कहानियों की .... अवश्य पढ़ना। (पुस्तकें)

चार धाम

१. **बदरीनाथ**– बदरीनाथ हिमालय की गोद में स्थित है। छः मास बर्फ पड़ने के कारण बदरीनाथ के पट सर्दियों में छः मास बन्द रहते हैं। इसके पुजारी केरल के नम्बूदरीपाद ब्राह्मण रावल कहे जाते हैं। ईश्वर की विचित्र लीला है कि बदरीनाथ में बर्फ से ढकी पहाड़ी की चोटियों से गर्म जल के सोते निकलते हैं।

२. **जगन्नाथपुरी**– पुरी उड़ीसा राज्य के अन्तर्गत एक नगर है। यह हिन्दुओं का पवित्र धाम है। यहाँ कृष्ण, बलराम तथा सुभद्रा के काष्ठ विग्रह हैं। प्रति वर्ष यहाँ रथ यात्रा निकाली जाती है।

३. **रामेश्वरम्**– बंगाल की खाड़ी और हिन्दमहासागर के संगम पर रामेश्वरम् धाम है। यहाँ भगवान राम ने शिवलिंग की स्थापना की थी। मन्दिर में २२ कुएं और कुण्ड हैं। जिनमें तीर्थ यात्री स्नान करते हैं।

४. **द्वारकापुरी**– द्वारका भी हिन्दुओं के चार धामों में से एक है। यह गुजरात प्रान्त में है। द्वारका में प्रद्युम्न, द्वारकाधीश, बलराम और देवकी के मन्दिर हैं।

प्रश्नः १. बदरीनाथ धाम की क्या प्राकृतिक विशेषता है?
२. जगन्नाथ धाम किस प्रदेश में है?
३. रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना किसने की थी?
४. किस प्रदेश में द्वारका धाम है।

देशभक्ति गीत

मातृभूमि पितृभूमि धर्मभू महान्
भरत भू महान् है, महान् है, महान्।
कैलाश काश्मीर जिसके भाल के मुकुट-मणि
है लोक में प्रसिद्ध जो अनूप रूप के धनी
हैं न विश्व में महान् स्थान जिन समान।। भरत भू०।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ विशाल जाह्नवी, सरस्वती व गोमती,
कौशिकी, कावेरी, सरयू ताप्ती, इरावती
ब्रह्मा, सिन्धु नर्मदा गोदावरी महान्।। भारत भू०।।
ये रुद्र ज्योतिर्लिंग जिसकी दिव्यता के दीप हैं
अनेक शक्तिपीठ जिसकी शक्ति के प्रतीक हैं
बद्री जगन द्वारका रामेश जिसके धाम।। भरत भू०।।
यह तत्वदर्शियों, महामनीषियों की है धरा
यहाँ निवास संत सिद्ध योगियों का है सदा
जन-जन में वास कर रहे भगवान राम-श्याम।। भरत भू०।।
संन्यासियों भूपाल चक्रवर्तियों की जन्म-भू
स्वधर्म ध्वज फहरा गये जो विश्वभर में दूर-दूर
सुनो अतीत गा रहा विजयश्री के गान।। भरत भू०।।

६ आधुनिक भारत

पुरस्कार

निम्नलिखित कार्यों से संबंधित दिये जाने वाले पुरस्कारों के नाम रिक्त स्थानों को पूर्ण करते हुए लिखिए।

(क) प्रत्येक वर्ष इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च द्वारा भारतीय कृषि के क्षेत्र में असामान्य कार्य के लिये दिया जाने वाला पुरस्कार..............। **(कृषि पंडित)**

(ख) भारतीय औद्योगिक एवं वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद् द्वारा भारतीय वैज्ञानिक की स्मृति में दिया जाने वाला........ पुरस्कार है। **(शान्ति स्वरूप भटनागर)**

(ग) .... उच्च कोटि के संगीतज्ञ को दिया जाता है। **(तानसेन पुरस्कार)**

(घ) समाज सेवा एवं युवा कार्यों में अच्छे काम के लिए स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर................. दिया जाता है। **(राष्ट्रीय युवा पुरस्कार)**

(ङ) सर्वोत्तम साहित्य के रचनाकार को दिया जाने वाला पुरस्कार.......। **(भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार)**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेल जगत्

१. निम्नलिखित खेलों के प्रत्येक पक्ष के खिलाड़ियों की संख्या-

बास्केटबाल	५	पोलो	४
फुटबाल	११	बालीबाल	६
हॉकी	११	क्रिकेट	११
वाटर पोलो	७	टेबल टेनिस/बैडमिंटन	१ या २
कबड्डी	७	शतरंज	१
खो-खो	६		

सामान्य ज्ञान

प्रश्न १. राष्ट्र गान व राष्ट्र गीत कौन-कौन से हैं?
उत्तर- "जन-गण-मन अधिनायक" राष्ट्र गान है तथा "वन्दे मातरम्" राष्ट्र गीत है।

प्रश्न २. अशोक चक्र में कितनी आरें हैं?
उत्तर– २४

प्रश्न ३. राष्ट्रीय ध्वज में ऊपर की ओर कौन-सा रंग होता है?
उत्तर- केसरिया।

प्रश्न ४. राष्ट्रीय ध्येय वाक्य क्या है?
उत्तर- सत्यमेव जयते।

प्रश्न ५. स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस में क्या अन्तर है?
उत्तर- स्वतंत्रता दिवस – १५ अगस्त, १६४७ को भारत स्वतंत्र हुआ तथा गणतंत्र दिवस – २६ जनवरी, १६५० को भारत का संविधान लागू हुआ।

प्रश्न ६. वन्देमातरम् गीत किस उपन्यास में है? इसे किसने लिखा है?
उत्तर- आनन्दमठ, बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय।

प्रश्न ७. राष्ट्रगान के रचयिता कौन हैं?
उत्तर- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

प्रश्न ८. थुम्बा कहाँ है? यह क्यों प्रसिद्ध है?
उत्तर- केरल, रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र।

प्रश्न ६. श्रीनिवास रामानुजम् का नाम किस लिये प्रसिद्ध है?
उत्तर- गणितज्ञ के नाते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न १०. विद्या भारती का ध्येय वाक्य क्या है?
उत्तर- विद्या भारती का ध्येय वाक्य 'सा विद्या या विमुक्तये' है।
प्रश्न ११. भारत का प्राचीन खेल कौन-सा है जिसमें भारत को लगातार तीन एशियाई खेल स्पर्द्धाओं में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है।
उत्तर- कबड्डी।
प्रश्न १२. राष्ट्रीय पक्षी का नामोल्लेख कीजिए।
उत्तर- मोर।
प्रश्न १३. डा. सी.वी.रमन को सन् १६३० में किस कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ?
उत्तर- भौतिक विज्ञान में रमन प्रभाव के आविष्कार हेतु।
प्रश्न १४. सौर ऊर्जा का स्रोत क्या है?
उत्तर- सूर्य।
प्रश्न १५ चमगादड़ रात के अंधेरे में भी बिना कठिनाई के कैसे उड़ता है?
उत्तर- वह अल्ट्रासोनिक तरंगों को भेजकर पुनःवापिस ग्रहण करता है।
प्रश्न-१६. भारत के वे प्रसिद्ध स्मारक कौन से हैं जिनमें सबसे अधिक भारतवासियों का योगदान है?
उत्तर- विवेकानन्द शिला स्मारक (कन्याकुमारी, तमिलनाडु) व श्रीराम मंदिर निर्माण (अयोध्या, उत्तर प्रदेश)।
प्रश्न १७. सरदार पटेल ने स्वतंत्रता के बाद भारत की एकता के लिये कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य किया?
उत्तर- विभिन्न रियासतों का एकीकरण।

कुछ विशेष जानकारी

भारत के प्रथम

सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला प्रदेश	केरल
सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर	कलकत्ता
सबसे अधिक साक्षरता वाला प्रदेश	केरल
सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र	मासायरम् (चेरापूंजी के निकट)
सबसे बड़ा प्लेटफार्म	खड़गपुर (पं. बंगाल)
सबसे बड़ा ग्रंथ	महाभारत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबसे बड़ा दरवाजा	बुलंद दरवाजा (फतेहपुर सीकरी)
सबसे बड़ा डेल्टा	सुन्दर वन (गंगा नदी)
सबसे बड़ा संग्रहालय	भारतीय संग्रहालय (कलकत्ता)
सबसे बड़ी झील	वूलर झील (कश्मीर)
सबसे बड़ी नदी	ब्रह्मपुत्र
सबसे बड़ी सुरंग	जवाहर सुरंग (कश्मीर)
सबसे बड़ा बरामदा	रामेश्वरम् मन्दिर
सबसे बड़ा शिवलिंग	भोजपुर (मध्य प्रदेश)
सबसे ऊँचा बाँध	भाखड़ा बाँध
सबसे पुराना धर्म	सनातन वैदिक धर्म
सबसे लम्बा बाँध	हीराकुण्ड (उड़ीसा)
सबसे बड़ा खण्ड काव्य	सावित्री (अरविन्द घोष)

महत्वपूर्ण संकेत और इनके अर्थ

कबूतर	शान्ति
उल्टा ध्वज	संकट
सफेद ध्वज	शान्ति, सन्धि
लालबत्ती	खतरा
आधा झुका ध्वज	राष्ट्रीय शोक
✚	चिकित्सा
→	रास्ता इधर से

आयुर्वेद

प्रश्न : आयुर्वेद का मुख्य सिद्धांत क्या है?

उत्तर : आयुर्वेद का मुख्य सिद्धांत 'यथा लोके-तथा पिण्डे' है। इसके अनुसार जो कुछ बाहरी संसार में विद्यमान् है वह शरीर में भी है जैसे : बाहरी संसार में उष्णता का द्योतक सूर्य एवं शीतलता का द्योतक चन्द्रमा है। इन दोनों (उष्णता व शीतलता) को वहन करने वाली वायु है। ठीक इसी प्रकार शरीर की उष्णता के लिए पित्त तथा शीतलता के लिए कफ एवं इन दोनों (पित्त व कफ) के वहन के लिए वायु विद्यमान् है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न : आयुर्वेद में त्रिदोष किसे कहते हैं तथा इनके कार्य क्या हैं?

उत्तर : वात-पित्त-कफ इन तीनों को "त्रिदोष" की संज्ञा दी जाती है। ये तीनों दोष सम मात्रा में रहकर शरीर का धारण-पोषण करते हैं तथा विषम मात्रा में हो जाने पर रोग उत्पन्न करते हैं।

प्रश्न : मानसिक गुण व दोष क्या हैं?

उत्तर : "सत्त्व" को मानसिक गुण तथा "रज व तम" को मानसिक दोष कहा जाता है।

एक चुनौती (स्वदेशी)

क्या तुम चुप रहोगे?
जब गीता के देश को
"हेलो" शेम्पू धोएगा और
'कोलगेट' से चमके, विदेशी दाँत काटेंगे.
भारत का वैभव
क्या तुम चुप रहोगे?
जब 'पैप्सी' की लहर, विदेशी जहर
पिलाएगी
और 'यूनियन कारबाईड' मृत्यु की लहर
लाएगी
क्या तुम चुप रहोगे?
जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वादे
'रिन' के बुलबुलों की तरह फट जायेंगे और
'नेसकैफे' काफी कालिख में दब जायेगी
भारतीय पेय उद्योग की आत्मा
क्या तुम चुप रहोगे?
जब 'फिलिप्स' के बल्ब
विदेशी क्रूर रोशनी का अंधेरा
और "विमको" की माचिसें
जला डालेंगी इतिहास में
पका हुआ हमारा व्यक्तित्व
क्या तुम चुप रहोगे
जब बच्चों के मुंह से छीना गया दूध
बनकर आएगा, "कैडबरी" की
चाकलेट
क्या मीठा लगेगा तुम्हें?
जब विदेशी "ब्रुक बाण्ड" का टाइगर
उछलेगा स्वदेशी चेतना पर
आ गया है दानव बहुराष्ट्रीय कम्पनियों
का
स्वदेशी के दमकते हुए सूर्य से
हम उसकी आँखें चौंधिया देंगे
और उसके मस्तक पर
अपने स्वावलम्बन के ब्रह्म अस्त्र से
करेंगे शक्तिशाली प्रहार।
स्वीकार है यह चुनौती,
स्वदेशी अपनायेंगे
विदेशी भगायेंगे, देश भक्त कहलायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वप्रेरणा से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

१. 'स्वदेशी' क्या है?
२. आज, स्वदेशी अपनाना अनिवार्य क्यों है?
३. स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
४. भारत को विश्व का नेता बनाने में हमारा क्या योगदान है?
५. आप कौन-सा दन्त मंजन व नहाने का साबुन प्रयोग करते हैं? क्या वे स्वदेशी हैं?

बालक के सर्वांगीण विकास की ओर

विद्या भारती ने आदर्श बालक की संकल्पना की है। वह शारीरिक दृष्टि से सबल, प्राणिक दृष्टि से सन्तुलित, मानसिक दृष्टि से सद्विचारी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेषी तथा आध्यात्मिक दृष्टि से सेवा भावी होनां चाहिए।

ऐसा सर्वांगीण विकसित बालक आगामी जीवन में उपरोक्त योग्यताओं तथा क्षमताओं को समाज को समर्पित कर सके। इस दृष्टि से बालकों के साधारण पाठ्यक्रम में पांच आधारभूत विषयों का समावेश किया गया है–

१. **शारीरिक शिक्षा**– स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास है। बालक शारीरिक दृष्टि से सबल बने तथा उनमें देशभक्ति, अनुशासन, चरित्र का विकास हो। वे प्रत्येक परिस्थिति में साहस, संयम एवं धैर्य को स्थिर बनाये रखें।
२. **योग शिक्षा**– प्राण के संरक्षण तथा संवर्द्धन से न केवल शरीर ही शक्तिशाली बनता है अपितु मस्तिष्क की शक्ति भी बहुत बढ़ जाती है। सूक्ष्म और गूढ़ विषयों को समझने में सुविधा रहती है तथा स्मरण शक्ति बढ़ जाती है।
३. **नैतिक शिक्षा**– मन को नियन्त्रित तथा सद्विचारी किये बिना बालक के सर्वांगीण विकास की संकल्पना सम्भव नहीं है। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से मानसिक विकास का निर्धारण होता है। अतः मन की साधना परम आवश्यक है ताकि बालक का कुसंस्कारों से बचाव तथा अच्छे विचारों की ओर प्रवृत्त करने के अभ्यास का विकास हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. **संगीत शिक्षा**– बालक अपने दैनिक कार्य में आनन्द की अनुभूति प्राप्त करे तथा उसके हृदय के तार प्राकृतिक सुन्दरता को देखकर झंकृत हो उठें। अतः उसके हृदय का संवेदनशील होना आवश्यक है।

५. **संस्कृत**– हमारी प्राचीन संस्कृति का मूल आधार संस्कृत है। इसके अध्ययन से ही बालक राष्ट्र के गौरवमय अतीत का रसास्वादन करता हुआ स्वयं को इससे जोड़ सकेगा तथा भारतीय होने का गौरव अनुभव कर सकेगा।

७ विश्व

महान् विभूतियाँ

१. **कपिल**– ब्रह्माण्ड के सृष्टि विकास संबंधी सिद्धान्त के आद्य प्रवर्तक। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा निष्क्रिय ऊर्जा की अवधारणा को स्पष्ट किया। 'षष्ठितन्त्र' ग्रन्थ के रचयिता। इनका जन्म आज से ५००० वर्ष पूर्व हुआ था।

२. **महात्मा बुद्ध**- मानवतावाद के प्राचीनतम प्रवर्तक। अष्टांग मार्ग (सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि) के निरूपक।

३. **आर्यभट्ट**– गणित में त्रिकोणमिति के आविष्कार पाई (π)के प्रथम प्रयोगकर्ता। आर्यभट्ट ने ही सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है एवं अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण चन्द्रमा अथवा पृथ्वी की छाया के परिणाम हैं। जन्म-ईस्वी सन् ४७६ में कुसुमपर (बिहार) में हुआ था।

४. **चन्द्रशेखर वैंकट रमन**– भौतिक विज्ञान में नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले एशिया के प्रथम वैज्ञानिक "विभिन्न पदार्थों द्वारा फैलाए गए प्रकाश के वर्ण पट में नए रंग होते हैं; जो मूल प्रकाश में नहीं होते।"–भौतिकी में रमन प्रभाव नाम से विख्यात है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. **विवेकानन्द**– हिन्दू समाज को नई संजीवनी देने वाले प्रखर राष्ट्रभक्त विवेकानन्द का आविर्भाव १६वीं शताब्दी की अभूतपूर्व उपलब्धि। शिकागो के 'प्रथम विश्वधर्म सम्मेलन' में हिन्दुत्व की श्रेष्ठता को प्रतिस्थापित किया। इनका जन्म दिवस १२ जनवरी प्रति वर्ष 'अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में विश्व भर में मनाया जाता है।

मत-पंथ

नाम	महापुरुष	नाम	महापुरुष
आर्य समाज	स्वामी दयानन्द	सिख	गुरुनानक
इस्लाम	हजरत मोहम्मद	ईसाई	ईसा (क्राइस्ट)
यहूदी	हजरत मूसा	पारसी	जरतुष्त

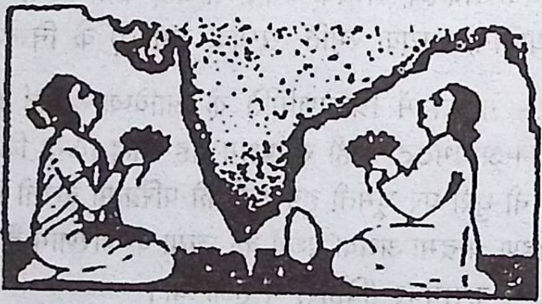

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कृति

साहित्य, कला, संगीत आदि मानव की श्रेष्ठ उपलब्धियाँ हैं। इन सभी उपलब्धियों को संस्कृति कहा जाता है। संस्कृति राष्ट्र अथवा समुदाय के समस्त संस्कारों का बोध कराती है। भारतीय संस्कृति में "स्व" के निराकरण एवं "पर" के विस्तारण को प्रधानता दी गई है। यह संस्कृति धर्म और कर्म प्रधान है। "अस्तेय, ब्रह्मचर्य, दया, करुणा, मैत्री, प्रेम, जीव-सेवा आदि श्रेष्ठ पुरुषों के अनुकरणीय गुण हैं। ऐसे महापुरुष कार्यकारण में सदैव सम्बन्ध स्थापित करके अपने जीवन-पथ पर अग्रसर होते हैं।"

प्रस्तुत पुस्तक माला में ऐसे तथ्य तथा महापुरुषों के संबंध में जानकारी दी गई है, जिसका सुकृत्यों से सम्बन्ध रहा है। आइए, हम इस महत्वपूर्ण विरासत 'भारतीय संस्कृति' के विषय में जानकारी प्राप्त करके सद्‌गुणों को अपने व्यक्तित्व के अंग बनाएं और इस विरासत का संदेश फैलाकर भारत माता के सुपुत्र-सुपुत्रियाँ बनने का गौरव पाएँ।

सा विद्या या विमुक्तये

विद्या भारती

हमारा लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवापीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर सके और उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वाले दीन-दुःखी, अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

-: कार्यालय :-
अखिल भारतीय संस्कृति – ज्ञान परीक्षा
संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र-१३६ ११८ (हरियाणा)
दूरभाष : ०१७४४-२१६०३ फैक्स : ०१७४४-२०५१५

मुद्रण : मातृभूमि, नई दिल्ली

विक्रमी संवत् : २०५८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh